अकेला तो नही

मधु राजवशी

प्रकाशक
सुरेन्द्र सिंह
३५४५, जटवाडा,
दरियागज, नई दिल्ली-२

मूल्य पाच रुपये

मुद्रक
प्रोग्रेसिव प्रिन्टस
१ लारेन्स रोड, रामपुरा, दिल्लो-३५

सुधा को

दो शब्द

मैं कविताओं के विषय मे कुछ नही कहना चाहता। जो कुछ लिखा, अच्छा या बुरा, आपके सामने है। प्रस्तुत कविता सग्रह मेरे अनेक मित्रो के सहयोग का फल है जिनमे सर्वश्री श्याम हरी तथा शील चन्द जैन उल्लेखनीय है।

डा० नगीन चन्द सहगल जिन्होने मुझे स्नेह दिया, मेरा मार्ग दर्शन किया और मेरी अनेक त्रुटियो को गुणो मे बदल दिया मै उनका किन शब्दो मे आभार प्रगट करूँ, समझ नही आता।

महेन्द्र, जिसने मुझे रोशनी दी, मेरी लेखनी को शक्ति और जो अनेक कविताओं मे आत्मा बन पिर गया उसके विषय मे चाह कर भी कुछ नही कह सकता, ऐसी ही इच्छा है उसकी। खामोश!

२६ जनवरी, १९७६ मधु राजवंशी

विषय सूचि

□

जिसे सँवारा प्रतिपल प्रतिक्षण पल-पल मैंने
आज उसे ही न मालूम क्यों छोड रहा हूँ
जीवन की हर श्वास साधना प्यास को अब मैं
न मालूम क्यों आज सभी कुछ तोड रहा हूँ !

□



विभावरी के अत चरण मे,
मृदु पवन के शील चलन मे,
ओस कणो के झर-झरनो मे,
ऊषा के अनगिन चुम्बन मे,

फूल कही पर है मुस्काता
भानू अग्नि है बरसाता ।

अगारे वह कितने भरता,
सुमन सुकोमल सु स्वपन मे,
जड प्रति बनता है तन उसका,
एक लगन मे और तपन मे ।

शनै-शनै है दिन अब ढलता,
अधकार पग आगे धरता,
जीवन की इति, अति तिमिर मे,
रोता है वह सुबकी भरता ।

रजनी नर्तन करती आती,
जीवन का क्या शेष लाती!
न जाने क्यो प्रथम चरण की,
याद उसे फिर है हो आती ।

अंतिम श्वासो के उलझन मे
मन ही मन, अब वह कहता -
मैं मुस्कराया था
हाँ!
क्यो कैसे ?
क्या यही था सब कुछ!
नही!
तो फिर क्या था?

इतना कहते, पलकें उसकी मिचती आती
पखुडियाँ कुछ झडती हैं, और झडती जाती
तो वह कहता —

जा रही हो तुम,
जीवन की सर्वस्व!
अच्छा जाओ,
अब सहन नही होता,
हा!
अंतिम भेंट—
यह मेरी तुम लेती जाओ—
श्वासो का ववण्डर
अस्त-व्यस्त ।



□

प्यार का बाग
कुछ और रहने दो
हँसो,
हँसने दो मुझे
न तोड़ो
बिखर जायेगा खुद ही
पराग भरा तन,
सँवर जाने दो,
कुछ प्यार सँजो,
और निखर जाने दो।

□



आशा मरे दिल की धड़कन
और निराशा घेरे मुझको,
तुम्हीं कहो अब कैसा जीवन,
कैसा लगता हूँ मैं तुमको ?

आँसू मेरे लगते कैसे
मुस्काने की आशा कैसी ?
तन मन जिसका झुलस गया हो
यौवन की फिर भाषा कैसी ?

अच्छी लगती है क्या तुमको,
शोभा होगी क्या उपवन की,
आज बता दो पूछ रहा मन,
चाल रहेगी क्या जीवन की?

मधु-ऋतु होगा मेरा जीवन,
दुल्हिन होगी वसुधा सारी;
या मरुभूमि मात्र ही होगी,
मेरी जीवन-छाया कारी?





मुरझा गया फूल,
डाल पर,
मुस्करा कर दो घडी,
मैं न कुम्हलाऊँगा,
क्या हुआ
गर न मुस्कराया उम्र भर!
अनजान हूँ
स्वभाव से मैं,
प्रकृति भिन्न मेरी,
अनेक बार—
हाथों मे इन्सान के—
रो पडी है धरा भी,
मृत्यु ने स्वाग रचाया है गगन पर,
मैं न रोऊँगा,
क्या हुआ—जो हृदय मरा है शिला,
और जीवन आग का !



□

धुँए की परछाई सी यह जिन्दगी
कौन जाने कब कहा छिप जायेगी?

नही डरता, मै रात के अधेरे से,
कौन जाने कब सुबह हो जायेगी?

कहाँ है छोर तनिक भी दीखता नही,
कौन मंजिल है कहा कुछ सूझता नही,

मौत की आवाज है यह जिन्दगी
क्या अधूरा ख्वाब ही रह जायेगी?

□



अकेला तो नही
करोडो साथ मेरे है
न जाने फिर घटन कैसी ?
जिन्दगी
सडक पर खीचता बैल ठेले को
पौं पौं करती गाडियाँ,
दुर्गन्ध को गन्ध मे बदलते ये इन्सान,
गति,
ममता,
असमानता कैसी?
ज़मी यह आसमान,
क्षितिज मे मिल रहा क्यूँ हो?
अनन्तता
दौर दादी का
गरीबी भुखमरी मेरी,
नही,
अनेको साथ मेरे है,
कटे ये हाथ मेरे,
फिर न जाने क्यो?





टिम टिम करते दीपों का अनमोल इशारा
टुकुर-टुकुर यह जगते, है सच कितना प्यारा
शरद् काल की प्रथम अमावस है यह देखो,
वह दीवाली, जगा जगा दीपों की माला ,

जाग रही है धरती, मैं भी जाग रहा हूँ
नजा रहा हूँ, जगा रहा हूँ प्यार तुम्हारा।



□

ऐ सावन की शील फुहारो,
क्यों जलती लग मुझे रही हो,
रिम-झिम रिम-झिम गीत पुराना,
गा, मेरा मन भिगो चली हो।

रहम करो तुम मेरे
याद न लाओ बीती
बीता सच अब तो सप
मधुर मिलन-मय भीगी र

मैं था, वह थी, था चन्दा भी,
बदली भी कुछ घिरी-घिरी थी,
चन्दा का मुह धुला-धुला था,
ओट मे रजनी नाच रही थी।

कभी-कभी हाँ कही-क
बिजली भी तो दमक रह
शील पवन के मृदु झोंक
शबनम प्यारी छलक रही

स्वर था केवल वायु की ही
पत्तो मे सगीत थी छेड,
एसे मे वह कोमल स्वर म,
लगी थी गाने लेट लट।

गा रही थी वो ही केवल
झूम रहा था अम्बर सारा
अत कडी मे माग रही थी
देव अमर हो प्यार हमारा।

इतना गा कर ले अगडाई
बाह अपनी फैलाई थी,
झटक के अपनी अलकोको फिर,
सभी दिशाय महकाई थी।

नीरवता के नीरवपन मे,
सृष्टि पराजित सी सोई थी,
मैं था जीवित, जीवित वह थी,
जीवन वेणी सजोई थी।

हृदय वीणा पर थे झकृत,
गीत मिलन के मद मे भीगे,
प्रेमालिगन मे हम दोनो
डूब चल थे धीरे धीरे।

⅃

पलकों ने पलकों को चूमा,
श्वासो ने श्वासों को छीना,
प्राणों ने प्राणों को पाया,
टकराई वीणा से वीणा ।

चौकी धरती, चौका अम्बर,
झूम उठा था समस्त व्योम,
गरज-गरज कर बरसे बादल,
टूट चला धरती का मौन ।

रिम-झिम रिम-झिम गाती बूंदे
छम-छम धरती पर थी आती;
रजनी का फिर काजल प्यारा,
धीरे-धीरे धोती जाती ।

ऐसे ही कई रातें बीती,
बीत गई वो प्यार संजोये,
दुनिया जब इक फूल बनी थी,
मधुकर बन हम जिसमें सोये ।

कहाँ शुरु था, कहाँ अंत था,
भान किसी को कब हो पाया,
और कहाँ से शुरू हुई फिर,
अमिट भाग्य की काली छाया ।

हवा चली या आंधी आई,
या जीवन तूफान बना था,
रुद्र स्वयं ही नर्तन करता,
मेरे सम्मुख आन तना था।

नही, मझे अब पता नही कुछ,
इतना ही बस देख रहा हूँ,
मैं हूँ, तुम हो, ज्वलित अग्नि है,
गला-गला मैं बह निकला हूँ।

जीवन कहाँ कहाँ है मंजिल
नही, मुझे अब पता नही है,
बौराया सा पगराया सा
जीवन बहता चला कही है।

ऐ सावन की शील फुहारा
रुक जाओ रिम झिम मत गाओ,
दया करो तुम मेरे ऊपर,
स्मृतियो के धन घेर न लाओ।

मान जाओ, मान भी जाओ,
ऐ सावन की शील फुहारा।





मुझ से न पूछ,
पूछ उनसे—
जो गिने नही जाते,
इन्सानो मे जोडे नहो जाते।
बरसते अगारे,
दहकती सडकें,
झुलसते प्राँण,
बचपन पे छाये बुढापा,
कमसिन, नाजुक, मासूम जवानियाँ
नही जानती—
प्यार,
गीत,
गीतो की जुबान
आती नही हँसी,
आता है पसीना,
चीर डालते है चट्टानो का जो सीना
बिछा देते हैं सडक,
खिला देते हैं बाग,

बसा देते है बना ऊँची अट्टालिकाओ मे ऐसे इन्सान-
नही जानते जो पानी भी पिलाना।
वही,
उसी दर पर
जो साते है ऐसे—
उठाने को आती है गाडी,
उठत नही इन्सान से,
पूछो उनसे—
क्या प्यार नही करते ?
प्यासे होकर भी
पानी की चाह नही करते ?





सारा जग जब सोया करता,
श्यामा रजनी ऊँघा करती,
और पवन जब मद मे डूबी,
प्यार से कलियाँ चूमा करती ।

तब चुपके से आकर कोई,
मुझ को बस यों छू जाता है,
चिता-अनल ज्यों, किसी मृतक को,
अपना ही हक जतलाता है ।

मै नीरव एकाकी सा फिर,
भटका करता वीरानो मे,
शमा न जिनको मिल पाई हो,
हूँ ऐसे बस परवानो मे ।





बिखरी अलकें रात की,
पूनम का चांद,
झुकी झुकी पलके,
हलका आँचल,
नि: शब्द !
झरते ओस-कण,
ओहले-ओहले छलकता हुआ जाम
मुहब्बत का,
प्यारा है मुझे कसम से,
जीवन का यह दाम ।



□

मैं अतीत मे खो रहा
सितार—रूँधा राग,
साध—परिहास,
अनुरोध—विछोह
टूटी स्मृतियाँ –
देखो अब मैं जोड रहा।
जीवन मे सहारा,
दीप प्रेम का,
ज्योति फैला
टिम-टिम करता,
देखो, कोई बुझा रहा।

सूर्य जीवन का,
पुल आशाओ का,
झँकृत करता साज हृदय का
देखो, कोई तोड रहा ।
— कूल नदी के,
बैठे देखो,
आती-जाती निरन्तर तरगे
किन्तु जीवन-सरिता मे,
तुमको प्राण
केवल तुमको—
देखो, कोई पुकार रहा ।
हवा चली,
पत्तो मे सगीत छिडा,
जलधर उमडे,
नील-गगन घनघोर हुआ,
वृष्टि हुई,
स्नान हुआ,
रूप निखरा सृष्टि का,
वह लहराई,
किन्तु,
बाढ आई
उमडी तरग,
तीक्षण-प्रवल-प्रचन्ड,
वेदना की,
हृदय मे किसीके,
जिसमे,
देखो, कोई सिमिट रहा ।

□



मद्भरी निशा के अचल मे
शिशु सी सोई धरती,
उषा के प्रथम चुम्बन मे
अगडाई सी ले जाग उठी,
केसर बिखर गया ।
शृगार निशा का
ममता मे
बन ओस-कण पिघल गया ।
ओस-बिन्दु
कलियो की पलको को,
मुख को चूम-चूम
ढुलक गई
बालायन मचल गया ।
जीवन फूटा,
सृष्टि मे यौवन उमडा,
गल बाहें डाले
धरती-अम्बर झूम उठा,
सूने-पन मे कही मैं अकेला
खडा देखता रहा निर्निमेष,
किसी ने धीरे से कहा—
प्यार
मेरा तुमको ।
हाँ,
दिन ढल गया ।



□

नही शिकायत मुझे तनिक भी आज किसी से
जीवन की ये डोर कहाँ अब कहाँ चली है
और पतग का सा जीवन धूँआ पहिन कर
कहाँ चला, ज्योत कहाँ पर आज जली है।

□



जन प्रागण से दूर कही पर
नीरवता मे पडा हुआ जो
जीवन जडता सजीव किये मा
सूने-पन मे खडा हुआ जो ।

एक किला, हाँ निर्जनता में
और क्षितिज म दूर कही पर,
क्रूर काल के हाथो से हो
जीवन जिसका बचा नही पर ।

विशाल शिविर के शखर खण्ड पर
खडा हुआ मैं खोया—खोया,
निर्निमेप सा प्राची को था
देख रहा बस जागा—सोया ।

ओस कणो में घुला-घुला अब
रजनी-काजल वह निकला था,
टिम-टिम तारे डूब चले थे
चाँद विदाई कह निकला था।

उसी समय हाँ देखा मैंने
प्राची मे था केसर विखरा,
ऊषा अरूणा उदित हुई थी,
अरूणिम उसका यौवन निखरा।

सृष्टि भी अब अलसाई सी
अगडाई ले जाग उठी थी,
डाल-डाल पर खिली कली से
मधुकर ने कुछ बात कही थी।

कलरव पक्षी—गण थे करते
चहुओर था राग छिडा
ऊषा मद मे नाच रही थी
यौवन का अब साज उठा।

उसी समय न मालूम कैसे
प्रतिमा तेरी सम्मुख आई
मन्द हसी सी नर्तन करती
मेरे अधरो पर भी छाई।

तुम थी सम्मुख उषा भी थी,
वादल भी अब रग भरे थे।
निशि के विछुडे भटके पक्षी
प्यार की वेला, सजो रहे थे।

ऊषा थी, अब केवल छाया,
हा। छाया केवल एक तुम्हारी,
सृष्टि भी जो झूम रही थी,
नही थी कुछ भी तुमसे न्यारी।

सृष्टि गीत जो गाया करती
स्वर तुमसे ही उसको मिलते
तुम हो सरगम मेरी सरगम
दिल के तार तुम्ही स हिलते।

□



बुझ जाने दो इन दीपो को,
इन दीपो को कौन जगाये !

जग मग करती बिजली जग मे
कौन मलिन का मोल लगाये !

कौन करेगा मोल कहो तो,
इन प्राणो को बुझ जाने दो,

बिके कभी कुछ, मोल लगा था
कितना सरहाया था मम को !





मुझ से न पूछ
पूछो इन बहारों से, नजारों से,
टिमटिमाते झिलमिलाते सितारों से,
फूलों से फूलों पर गुनगुनाते
मदमस्त भँवरों की कतारों से,
झरनों से, नदियों से,
लहरों से टकराते किनारों से
क्या प्यार किया था मैंने
क्यों ख्वाब सजाया था मैंने।





नयनो से जब नीर बहे तो
जल धरती पे सूखा जाता

हृदय कोई पीर पले तो
साथी प्रियतम छूटा जाता।

ऐसे जग मे, ऐसे नभ मे
श्वास श्वास जहा घुटता हो

दीप प्यार का कौन जगाये
धूँआ-धूँआ ही उठता हो।

फिर भी कोई हँस पाये तो
हँसने लगते चाँद सितारे

और शर्म से किसी बाग मे
खिलने लगते फूल हैं प्यारे।

फूलो से है प्यार सभी को
फिर भी शूल नही कम होते

काटों से यदि प्यार बने तो
फूल मे वो भी कम न होते।



□

अँधियारी के घर देखी, जलती दीप-शिखा है मैंने
अश्रु कणो से उर मे देखी, हसती दिशा-दिशा है मैंने।

रजनी आती मैला आँचल
मचती है तारो मे हलचल,
आँसू होते नैन छिपाये
कहते है सब बढ चल बढ चल।

चुपके चुपके बहते जाते,
लेकिन पीडा कम होती ना
कहते जाते सब तारागण
थक सोते है रजनी नैना।

कौन वहाँ पर बैठा होता
आँसू उसके पोछा करता
चूमा करता उसकी पलके
पीडा उसकी सोचा करता।

हर पीडा के उर मे देखी हँसी ओस सी ढुलक रही है
और निशा के गर्भित नभ मे उषा कोमला पुलक रही है।

मेरे उर फिर तू क्यो रोता ?

□

□

दिल कहता है प्यार करूँ मैं
जीवन का इक राग बनूं मैं
और किसी के कोमल उर का
स्पन्दित झंकृत तार बनूं मैं।

स्वर हो मेरे, शब्द किसी के,
और मिलन हो यों दोनों का,
छूता हो हर तार तार मे
टूटे ना उर, उर साजों का।

क्या ही अच्छा हो गर ऐसा
जीवन अमृत ही बन जावे,
जग हो सारा ढलता-ढलता
सूरज अपना ही तर आवे ।

अरुणा सदृश बदन हो उसका
अलकों की पडती हो छाया,
पलके हो कुछ झुकी-झुकी सी
मद् माती हो सारी काया ।

एक आह्लाद लहराता हो फिर
आता यहाँ मैं सदा विचारा
हरा-भरा पानी आगे मुझ पर
सदा [illegible] घना किनारा !

अगर कभी ऐसा हो पाये,
जीवन [illegible] ही बन जावे
डूब रहा होऊँ मैं उसमें
वह [illegible] मेरा पावे !

□

□

पलों में बटी ये जिन्दगी
युगों की बात कहेगी
और कहानी जीवन भर की
पल में एक बनेगी।

चान्द की चितचोर किरण
झिलमिलाती रात सारी
प्यार में ये गल झिसी के
बून्द बून्द हा ! ढलेगी।

ऊषा तरुणी वक्ष दिखाती
और उमडती अलसाती
केसरिया अलक बिखराती
पुष्प लता झूमें गाती।

बिखर रहा, है पराग कैसे
छलक रही है हाला

दिन भर की फिर धूप
हाय ! कोमला झुलसेगी

जलते दिन की गाथा को
हर घटती शाम कहेगी।

□

□

चिता अर्चना फूल यही है
बुझे दीप कुछ जगे नही हैं।

यह जो तुम को आस-पास ही
दीख रहा है जलता-गलता
शव है जीवित मरे हुओ के
आशा की जाग्रत असफलता।

चिता अर्चना फूल यही है
बुझे दीप कुछ जगे नही है।

धुआ उठा जो दीख रहा है
दवा हुआ कुछ जला नही है
वही पतगे का जीवित शव
जला नही, बढ चला कही है।

चिता अर्चना फूल यही है
बुझे दीप कुछ जगे नही हैं

स्मृतियाँ सब समिधा सी बन
साहस मुझको बँधा रही है,
अग्नि समर्पित हो जायेगी
शेष अधिक कुछ रहा नही है।

चिता अर्चना फूल यही है
बुझे दीप कुछ जगे नही है।

दूर कही जनरव मे बैठा
मेरा साथी आत्मलीन है
इधर प्राण के नीरवपन मे
हलचल है, उर उदासीन है।

चिता अर्चना फूल यही है
बुझे दीप कुछ जगे नही है।



□

जग रही दीपक-शिखा
टिमटिमाता दीप
अब अंधेरा है कहाँ
गा मन मेरे, तू
प्यार का कोई गीत।

□

□

रात चुप, है गगन मे तारे
स्वप्न सजाता जग है सोया
मैं ही जाग रहा हू केवल
न जाने क्या मेरा खोया।

प्यार नही, नही प्रतीक्षा
स्वप्न जो, क्या स्वप्न सजाऊ
फिर भी जाने क्यो दिल मेरा
कहता कि मैं गाना गाऊ।

उदास नही खामोशी है बस
आसू सूख चुके है कब के
बीत गई जब खुशिया सारी
रहे पास क्यो दिन भी गम के।

अभी अन्धेरा छट जायेगा
ऊषा नर्तन करती होगी
फूल खिलेंगे बागो मे फिर
सृष्टि सारी जगती होगी।

□



जीवन डगर बहुत है लम्बी
आवारा सी और नवेली
ऐसे कब तक भटकूगा मैं
आज यही है बनी पहेली।

मेरा पागल मन तो देखो
ना जाने क्यो मचल रहा है ?
अनजाना वन जान बूझ कर
हर आँचल पर विचल रहा है।

एक हवा के झोके मे यह
गिरता आया ढुलक रहा है
जैसे कोई ओस— बिन्दु सा
नील गगन से छलक रहा है।

देख चुका मै, देख रहा हूँ
सारे जग को सब जगती को,
मेरे है यह, मुझे मिले यो,
जैसे दूर, गगन, धरती को।

किसको अपना कहूँ यहाँ मैं
और किसे अब मै बिसराऊँ ?
सभी एक हैं, एक रूप है,
देख-देख सब मैं बौराऊँ ।



□

मौन है ससार सारा रजनी हाला छलक रही
आओ हम तुम प्यार करे ।
आचल को ढल जाने दो
अलको को खुल जाने दो
झुकी हुई पलको को अब—
पलको से मिल जानें दो,
चुप है वातायन सारा अम्बर हाला छलक रही
आओ हम इक बात करे।
नदिया का यह शीतल तीर
हृदय मे यह कैसी पीर
श्वासो को पिर जाने दो,
अधरो को मिल जाने दो,
देखेगा अब कौन सुनो, कहती क्या निर्मल धारा—
लहरें है बस मचल रही,
आओ हम—तुम प्यार करें ।
ऐसे ही कुछ रहने दो,
प्राणो मे अग्नि बहने दो
रहने दो कुछ और, जरा
लहरो को टकराने दो,
झूम रहा अम्बर सारा जीवन हाला छलक रही
आओ हम—तुम पाप करें ।

□



मेरी वीणा सूनी सूनी, गीत मरे सो गये है
आज मैं भी खोया-खोया, मीत मेरे खो गये हैं

है अधेरा चहु ओर अब
बढ रहा ज्यो दिन ढला हो
मेरा सुख मेरी खुशी सब
आज या ज्यो शव जला हो

हर डगर अब भूली-भूली चिन्ह सारे खो गए है
मेरी वीणा सूनी-सूनी, गीत मेरे सो गये है।





निशा निमन्त्रित किया किसे था
पथ निरखता मेरा मन,
यह तो जगता रहा है यूँ ही
जैसे जगते तारा गण ।

ऊषा चाह थी ही किसको
यह जो आई निर्लज्ज बन
नगर-वधू सी सज्जा इसकी
लिपट रही क्यो मेरे तन।

ऊष ! जा तू जा चली जा,
याद दिला न मेरी साथिन,
वह भी, तुझसी बिल्कुल भोली,
बनी खडी थी मेरा तन मन ।

उसका आचल रजन्याचल था,
सुन्दर थी वह तेरे सम,
और सुकोमल इतनी थी वह
फूल भी सारे होते कम ।

छोड गई वह स्वर छूटा सा
ज्या स्वरो का टूटे बधन
कैसे गाऊ गीत मैं कोई
दिल होता है उनमन-उनमन ।



□

कौन आया उर द्वारे मेरे,
किसने मेरे गीत जगाये ?
सोया था मैं सोने देते
सपने मेरे हुए पराये ।

बिखर गईं वे लड़ियाँ सारी
जिनमें फूल पिरोये मैंने
और दीप वो धूआं पहिन कर
उडा कहाँ क्या देखा तुमने ?

अन्धकार अब सभी ओर है
और घुटन सी है प्राणों मे,
रहने दो मत छुओ मुझे तुम,
बहुत दुखन है उर-घावो मे ।

मैंने भी था महल सजाया
झूम-झूम गीतो को गाया,
धरती को था गगन बनाया
और गगन बाहो मे लाया ।

बिखर गया हा जीवन सारा
ज्यो शबनम अम्बर से छलके
आसू भी अब सूख चुके है
आंख बुझी है मलते मलते ।

मैं न मागूगा तुमसे कुछ,
चाहे जीवन तुम लौटा दो,
बिखर गई जब सुधियां सारी,
आह् करू क्या इन निधियो को।

अब तो बस तुम सो जाने दो,
लाखो मे अब खो जाने दो,
बहुत पडी है जिन्दा लाशें,
देखो किंचित इन राहो को।

कितनी चौडी, कितनी काली,
कितनी लम्बी लम्बी सडकें,
कितने निर्मल, कितने उज्जवल,
कितने कमसिन दिल है धडक!

भाग रही शौ शौ है गाडी,
कितने कोमल प्राण बिछे है
श्वांस श्वांस भी देखो तो तुम,
मृत शरीर भी बिके हुये है!





सजी कल्पना, मैं गीत प्रेम का गा रहा हूँ।

ज्ञात मुझे, तुम्हे प्रेम नही,
फिर भी तो मैं आस किये हू,
हो सकता है भूल करो तुम,
आगे-पीछे भटक रहा हू।

जीवन तुमको मान प्रिये मैं,
अपना जीवन भूल रहा हू।

सजी कल्पना, मैं गीत प्रेम का गा रहा हू।

काल विकट है, देख रहा मै,
मृत्यु अब तो अति निकट है,
फिर भी मेरी साँस साँस मे,
एक तुम्हारी ही चाहत है।

हारा सब कुछ जीवन मे प्रिय,
अब तो जीवन हार रहा हू।

सजी कल्पना, मैं गीत प्रेम का गा रहा हू।



□

तारे अभी भी झिल-मिलाते तो हैं,
मगर है नही अब कोई पास भी,

　　मजिल यो अभी भी बुलाती हैं मुझको
　　मगर है नही अब कोई आस भी।

चलता चला हू मैं चल ता रहा हू,
कहाँ मेरा जीवन अब मैं कहाँ हू,

　　मज़िल अभी तक खडी तो यही थी
　　जहा से कि अब मैं बढा जा रहा हू।

बुलाता तो कोई अभी भी है मुझको
जो लिये हाथ म है कोई जाम भी,

　　नही मौत है यह—मुहौब्बत यही है,
　　लगी या मुझ है बडी प्यास भी।

तारे अभी भी भिल-मिलात तो है
मगर है नही अब कोई पास भी।

　　मज़िल यो अभी भी बुलाती हैं मुझको
　　मगर है नही अब कोई आस भी।

□



सजी कल्पना, मैं गीत प्रेम का गा रहा हूँ

ज्ञात मुझे, तुम्हे प्रेम नही,
फिर भी तो मैं आस किये हू,
हो सकता है भूल करो तुम,
आगे-पीछे भटक रहा हू ।

जीवन तुमको मान प्रिये मैं,
अपना जीवन भूल रहा हू ।

सजी कल्पना, मैं गीत प्रम का गा रहा हू ।

काल विकट है, देख रहा मैं
मृत्यु अब तो अति निकट है,
फिर भी मेरी साँस साँस म,
एक तुम्हारी ही चाहत है।

हारा सब कुछ जीवन मे प्रिय
अब तो जीवन हार रहा हू ।

सजी कल्पना, मैं गीत प्रेम का गा रहा हू ।





तारे अभी भी झिल-मिलाते तो है,
मगर है नही अब कोई पास भी,

मजिले यो अभी भी बुलाती हैं मुझको
मगर है नही अब कोई आस भी।

चलता चला हू मैं चल तो रहा हू,
कहाँ मेरा जीवन अब मैं वहाँ हू,

मज़िले अभी तक खडी तो यही थी,
जहाँ से कि अब मैं बढा जा रहा हू।

बुलाता तो कोई अभी भी है मुझको
जो लिये हाथ मे है कोई जाम भी,

नही मौत है यह—मुहोब्बत यही है,
लगी यो मुझे है बडी प्यास भी।

तारे अभी भी झिल-मिलाते तो हैं
मगर है नही अब कोई पास भी।

मज़िले यो अभी भी बुलाती हैं मुझको
मगर है नहीं अब कोई आस भी।



□

मैं सो पाता कभी कभी तो,
सपने मेरे जग जाते है,
दिन भर के सब बुझे दीप,
नव-ज्योति को ले आते हैं ।

नया राग और नया साज़
फिर, आशा मेरी जग जाती है,
नवल-वधू सी मंजिल मेरी,
चिर-प्रतीक्षा बन जाती है ।

नव - गीतो को गाते - गाते,
आगे - आगे मै हू बढता,
किन्तु जब दिन मेरा ढलता,
सुमन-पाँख सा मैं हू झडता ।

लेकिन मैं वह फूल नही जो,
मुरझा के फिर खिल न पाऊँ,
न ही मैं वह बादल हू जो,
टकरा के भी छन न पाऊँ ।

जो कुछ होता आया अब तक,
स्वीकार रहा, स्वीकार मुझे है;
लेकिन मंजिल कभी न पाऊँ,
जीवन से नही प्यार मुझे है ।

मंज़िल क्या मेरे जीवन की,
यह मैं तुमको क्या बतलाऊँ;
मानवता का दीप बनूं मैं,
हर वाणी का स्वर बन जाऊँ।

यह दीवारें ऊँची - ऊँची,
या चट्टानें ज्वाला—मुख सी,
जिनमें जीवन पुलक रहा है,
मानव जीवन झुलस रहा है।

हो सकता यह नियम नैयती का,
या सुन्दर यह रूप सृष्टि का,
मैं इसको लेकिन ढालूगा
मिट्टी चूना कर डालूगा।

प्रतिमा फिर सुन्दर सी होगी,
मानवता की देवी होगी;
भावों से भर दूगा उसको,
नव-जीवित कर दूगा उसको।





आज मेरा जी चाहता है —

तुम को फिर मैं पा जाऊँ,
प्यार करूँ फिर नए सिरे से,
फिर नई ठोकर मैं खाऊँ।

आज मेरा जी चाहता है —

रोक दूँ रुकती धड़कन को,
और उठा लूँ नये साज में,
फिर किसी नई सरगम को।

आज मेरा जी चाहता है —

तोड दूँ चमकते सितारों को,
और सजा दूँ टूटी फूटी,
अपनी बीती आशाओं को ।

आज मेरा जी चाहता है —

विद्रोह सिखाऊँ जीवन को,
दीप जगाऊँ मानवता का,
उलटा दूँ मैं भू-मण्डल को।

आज मेरा जी चाहता है —

नई बात कोई कर जाऊँ,
हर कली मुर्झाती, मुस्काकर,
मैं मुर्झा कर फिर मुस्काऊँ।

आज मेरा जी चाहता है —

चन्दा की मुस्कान चुराऊँ,
जीवन की श्मशान को अपनी,
एक बार तो और सजाऊँ।

आज मेरा जी चाहता है —

दहकाऊँ आस-चिताओं को,
जली नहीं अवशेष अभी है,
कर जाऊँ मुक्ति उनकी तो।

आज मेरा जी चाहता है —

अब न पुकारे कोई मुझको,
शून्य मे अब जा रहा मै,
शून्य दिखाने हेतु शून्य को।

□

□

मैं हूँ आँसू आज वही, जो
छिपा सके ना नयन किसी के,
मैं हूँ पीडा आज वही, जो
सिमिट सकी ना और किसी से।

आज धरा है नीरव सोती,
रजनी है विधवा सी रोती,
एक हृदय के घाव छिपाती,
दूजी उनको है सहलाती।

आहे सब की पीडित होती,
घडी मिलन की सीमित होती,
कौन किसी को कहने जाता,
आशाये जब होती — रोती।

पीर प्यार की भरी जवानी,
बनती जाये एक कहानी,
कहता कोई थका न हारा,
होती जाती अमर निशानी ।

मेरी पीडा भिन्न सभी से,
कहता चातक, मेघ सताते,
मेरी प्यास बुझेगी कैसे,
उमडा सागर आज बता दे ।

ऐसे ही क्या जीना होगा,
प्यास को अपनी पीना होगा,
रही जो आशा गुदगुदाती,
उसको क्या शरमाना होगा ?

☐



ऊषा ने जब तोड तारे,
गगन था रोया, मैने देखा—

घरती ने मुस्कान भरी थी ।

रजनी का शृंगार लूट कर,
ऊषा बाला, जीवन हाला—

स्वर्ण कलश मे लिये खडी थी ।

यौवन का था मूक प्रदर्शन,
सभी ओर थी मस्ती छाई,
धडक रहे थे दिल यों सारे,
कली-कली ने ली अंगडाई ।

बाकी था न होश किसी को,
सुनता था न कोई कहानी,
रोया होगा कोई कही पे,
रोती है न कोई जवानी ।

बहक रहे थे राही सारे,
बहक रही थी पग-पग राहे,
भ्रम चले थे गिरने - पडते,
लिये हाथ मे निज की बाहे।

सुन्दर था यो सबका जीवन,
सुन्दर था या सबका सपना,
कौन किसी की सुनता था फिर,
दीख रहा था अपना - अपना।

धीरे-धीरे होश था लौटा,
सत्य ने था जब भ्रम को तोडा,
कौन कहा पर बैठा था फिर,
कौन था किसका अपना जोडा?

रहा किसी का साजन बैठा,
रही किसी की बैठी सजनी,
सभी अकेले बैठे रोते—
हँसती रहती केवल रजनी।





मैं कुछ भूल रहा हूँ।
शेष—
प्रिय स्मृति
जीवन-विस्मृति
तृप्ति!
अतृप्ति ही अतृप्ति
और मैं कुछ भूल रहा हूँ।
आशा—पिपासा
निराशा, जीवन साथिन
आह-दाह
धुँआ-घुटन
घुटन ही घुटन
मृत्यु, नही जीवन
माध्यम?
हाँ!
और मैं कुछ भूल रहा हूँ।





खुशियाँ सबको भाती जग मे
सुख को सीच रहा ससार
लेकिन बीज काल का ऐसा
दुख को देता सदा उभार।

दुख होता है, दुख होता क्या?
सुख का होता केवल भार,
सुख की सीमा दुख से होती,
दुख का होता, यह अतिचार।

ऊषा सुख मे, सध्या दुख म,
कहते मिलकर है जन चार,
किन्तु मुझे तो दीख रहा बस,
दुख इस तट पर, दुख उस पार

सुख का द्योतक दुख ही होना
दुख से भाग रहा ससार
सुख का आचल छीन रहे सब
हृदय करता हाहाकार ।





बीत गई लो शरद् पूर्णिमा
और अमावस अब है छाई।

पूनम की अन्तिम शोभा को
निश्चल छाया है बन आई।

स्मृति पिया उर मे सजोये
है यह आज किसी विरहिन सी;
प्रथम मिलन मे छूट गया हो,
सपन सजाता जिसका साथी।

टूट गये हो सारे वन्धन,
टूट गई हो आशा सारी,
अलकें बिखरी, पलके छलकी,
पल रह गई हो अँधियारी।

शेप रूप अवशेप सभी का
आचल मे भर अपने लाई,
गत जीवन की छाया है यह
आगत की बन आशा आई।

दीप जलाओ मेरे भाई
देखो अब दीपावली आई।

वीत गई लो शरद् पूर्णिमा
और अमावस अब है छाई।



□

बिखर गया हा ! जीवन सारा
ज्यो शबनम अम्बर से छलके
आँसू भी अब सूख चुके है
बुझे नेत्र है मलते मलते।

बहुत जगाया था दीपो को,
बहुत मनाया था गीतो को।

□



गीत अभी एक गाना होगा
तारो को झुकाना होगा

मौत ! मुझे नही तू साज उठा ।

सब सासे मेरी गीत बनी
आज बधी वह एक वही

तार-तार मे राग अधूरा
पूरा उनको करना होगा ।

सौ सदियो के सदेशे कुछ
मानवपन के अदेशे कुछ

भरे हुये मेरे गीतो में
दर-दर तक पहुचाना होगा ।

शब्द-शब्द है दीप बना सा,
जीवन पथ का मीत बना सा,

बाती को सरका कर उसकी
शोला इक भडकाना होगा ।

अक्षर-अक्षर सगीत लिये है
हर जीवन का गीत लिये है ।

आज उन्ही को गाते-गाते
साथ उन्ही के बहना होगा ।

गीत अभी गाना एक होगा

मौत मुझे नही तू साज उठा ।



□

किसी को किसी के दिल की क्या खबर
कहा गिरा, कहाँ उठा, कब सवर गई
कहा उलझ गई, कहा खो गई डगर।
कब किसी को चाहा कहा
कौन उसको मिला कहा
किस को मिलकर वह कहाँ
अपने को ही खो गया
और जब भी होश आया
तो स्वप्न का मौन वन
छिप गया वह कहा
क्या खबर।
किसी को किसी के दिल की क्या खबर।

□

□

दिल मे हलचल थी कुछ ऐसी
शब्द न अधरो को मिल पाये
लेकिन मूक मिलन की भाषा
क्या कहती थी कोई बताये।

क्या बाधा थी दिल मे ऐसी
जो वह कुछ भी बोल न पाई,
और विदा के अंत समय पर
बात छिपाती सी मुस्काई।

पहले तो कुछ भिन्न था इससे
अभिवादन कर वह मिलती थी
प्राय. देख मुझे वह कुछ-कुछ
कुसुम कमलिनी सी खिलती थी।

देख मुझे अब नजरे झुकती
और झुकी ही रह जाती है
बात इधर भी है कुछ ऐसी
जो मुझ को भी सकुचाती है।

लेकिन क्या है राज छिपा जो
मैं हू अब तक जान न पाया
तुम्ही कहो अब क्या कुछ है यह
दिल ने मुझको बहुत सताया!

चन्दा मेरे आज बता दे
रजनी तेरी क्या कहती है ?
दूर कहीं पर तू होता है
दूर कहीं पर वह बहती है।

ऐसा क्यों है, क्यों होता है
सागर की तरंग बताओ।
दूर किनारा जितना होता
उतना ही तुम उमडी जाओ।

और किनारा पाते ही तुम
सकुचाती-सी ढलती जाओ,
सागर मे फिर दूर कहीं पै
हँसते हँसते छलती जाओ।

विगत निशा मे पलकें थी जब
स्वप्निल सी, पर गीली गीली
दिल ने मेरे प्यार कहा था
प्यार की आंख होती नीली।

डूब ले जितना डूबा जाये
लेकिन मुख से शब्द न कहना
पलक भींचे सांस को खींचे
चुपके-चुपके सब कुछ सहना।





आँखो में आकाश लिये
मै भटका जीवन भर
दिल मे तेरी चाह लिये
मैं भटका जीवन भर।

रंगयी जुल्फों का साया
हो साया पलको का
बीन लूँ श्वासो को तेरे
हो प्याला अधरो का

शबनमी ये गात तेरा
हो मेरा पल दो पल
आँखो में आकाश लिये
मैं भटका जीवन भर।

अरुण उषा यह तरुण उषा
दिशा दिशा है गाती
सृष्टि भर मे केसरिया
भर यौवन छलकती।

ढूलका रजनी का आचल है
छलक रही है शबनम
दे दो प्यार मुझे तुम दे दो
जीवन के दो पल।

आँखो मे आकाश लिये
मै भटका जीवन भर।





जिन्दगी को छोड पीछे आज आगे बढ चला हूँ
कौन जाने साथ मेरे, साथ किसके बढ चला हूँ।

मजिलो की बात प्यारी
प्यार मुझको भी रहा है।
और चमन के फूल का
मनुहार मुझको भी रहा है।

ख्वाब था सब ख्वाब को अब तोड आगे बढ चला हूँ
और टूटे साज को अब छोड आगे बढ चला हूँ।

चाँदनी क्या चाँद मुझको
दीप क्या दीपक शलभ क्या।
और तारो का सहारा
हो गगन को, है मुझे क्या।

और अधेरा हो घनेरा मै निशाचर बढ चला हूँ
और बुझती दीप-माला का धुँआ बन उड चला हूँ।



□

फूल स्वप्न बन गये
शूल आँचल भर गये

दरार बढती गई
जिन्दगी तडपती गई।

प्यार का सत्य
स्वप्न बन गया
जिन्दगी को
दफन कर गया

अश्रु दीप बुझा गये,
चाँद को तरसा गये।

□



सोया अब तक जग था सारा
डूबे है अब चान्द सितारे।

आई क्यों न प्राण प्रिये तुम
रहा मैं बैठा नदी किनारे।

तुमने ही तो कहा मुझे था
राह देखना मैं आऊंगी।
वरना देखो कसम है तुमको
सच कहती हू मर जाऊंगी।

बैठा अब तक देख रहा हूं
डगर तुम्हारी इसी सहारे
सावन भी अब बीत गया है
बीतेंगी यों सभी बहारें।

आई क्यों न प्राण प्रिये तुम
रहा मैं बैठा नदी किनारे।

सोया अब तक जग था सारा
डूबे हैं अब चान्द सितारे।



□

कैसे कहू क्या बतलाऊँ,
क्यो उदास मैं अब रहता हू ?

प्यार मुझे है एक इसी से
अचल भर कर प्यार मिला है,
जीवन-भर मैं साथ इसी के
क्यो ना घुल मिल, मिल-घुल जाऊँ।

कैसे कहू क्या बतलाऊँ
क्यो उदास मै अब रहता हू ?

गीतो की जो जननि निराशा
रहती साथ सदा है मेरे,
साध कहो या शाप कहो तुम,
गीतो की भापा है मेरे।

श्वाँस-श्वाँस मे, प्राण-प्राण मे
कैसे भूलूँ भूल मैं पाऊँ,

कैसे कहू मैं क्या बतलाऊँ
क्यो उदास मैं अब रहता हूँ!

मेरी प्रिया उदासी मेरी
जीवन-साथिन रही सदा है
वचन दिया है मुझे इसी ने
जीवन भर का साथ बना है।

छोड़ू कैसे छोड़ मैं पाऊँ
कैसे कहूं मैं क्या बतलाऊँ!

मैं वह एक विशाल वृक्ष हूँ
पतझड़ हो जो ठूठ बना है,
किंचित एक प्रहार मात्र ही
जड को जिसकी काट गया है।

हा! सावन किस भाँति मनाऊँ
कैसे कहू, क्या बतलाऊँ?

ज्ञात मुझे है बादल छन-छन
सृष्टि को वह नहलाते है
शील पवन मे वसन बदल कर
चाल नई वे सिखलाते है।

क्यो ना मै लोचन बरसाऊँ
कैसे कहू क्या बतलाऊँ—

क्यो उदास मैं अब रहता हूँ?





चांद तो निकला नही पर, दीप मेरा जल रहा है।

आ सकोगी या नही तुम
प्रश्न दिल मे यह नही है,
देखता मैं आज केवल,
प्यार तेरा ही वही है।

एक तेरी चाह से ही, दर्द दिल मे पल रहा है
चांद तो निकला नही पर, दीप मेरा जल रहा है।

युग-युगो से आस, करता
प्यार, अमर मेरी पिपासा,
प्यार अगर तुम दे सको न,
क्या मिटेगी मेरी आशा।

मेरा जीवन आस मेरी, हृदय मेरा जग रहा है
चाँद तो निकला नही पर दीप मेरा जल रहा है।

विस्मृति के आवरण मे,
दीखता है तीत अपना
जो झलकता आज भी है
मधुर सुन्दर एक सपना।

सुप्त सा मै देखता हू प्यार मुझ को मिल रहा है
चान्द मेरा ही नही पर, दीप मेरा जल रहा है।

मैं युगो पर राज करता प्यार मेरा वल रहा है
चाँद मेरा ही नही पर, दीप मेरा जल रहा है।

□



क्यों उदासी ही उदासी
आ मुझ कोई बता दे ।

साधता मैं राग को हूं
तार क्यों हैं टूट जाते ?
बाधता मैं तार को हू
गीत क्यो है छूट जाते ?

आ मुझे कोई बता दे ।

आज जीवन से मैं वंचित
मीत मेरा खो गया क्यों ?
दो दिलो का मीत था जो
गीत मेरा खो गया क्यों ?
हास्य मेरा और उसका
आज मुझ पर रो गया क्यो ?

आ मुझे कोई बता दे ।

आज उर के गहनतम मे
मर्म ऐसा है भरा क्यो ?
जहां छूता दर्द पाता
घाव का सा उर पुरा क्यो ?

तिमिर का सा ही तिमिर है
पख नीडज के कटे क्यो ?

आ मुझे कोई बता दे।

मैं लहरो के अक मे रह
कर अछूता सा बहा क्यो ?
मधु कलश मे डूबकर भी
मै तृषित सा ही रहा क्यो ?

आज भी इस प्यास को
नव आस तडपा सी रही क्यो
आ मुझे कोई बता दे।



□

ये गीत बन्द करो,
साजे उल्फत भाता नही अब ।
जमानाये दौर
न मालूम कहाँ खीच लाया है मुझे?
इन्सान,
इन्सान ही नही
हैवान से परे
बढती हुई भीड
क्या है?
मेला तो नही,
तमाशा है,
जिन्दगी घुट रही है ।

□



वीणा-वादिनि, जीवन-दायिनि,
स्नेहमयी, कल्याण कारिणी।

कहाँ कहाँ से शब्द सजोऊँ
जिनसे तेरी महिमा गाऊँ?
खोज खोज मैं हार गया हूँ
लेकिन कोई पार न पाऊँ।

बुद्धिहीन मैं भावहीन हूँ
तू है विद्या—ज्ञान-सारिणि।

वीणा-वादिनि, जीवन दायिनि
स्नेहमयी, कल्याण-कारिणी।

भक्ति-भाव की दीप शिखा से
पूजा का लघु दीप जगा दू,
मैं फूलो की गध बनू, मा,
तेरे मन्दिर को महका दू,

मैं तुझसे यह माग रहा हूँ
मा मेरी, तू दे-दे वाणी।

वीणा-वादिनि, जीवन-दायिनि
स्नेहमयी कल्याण-कारिणी।

